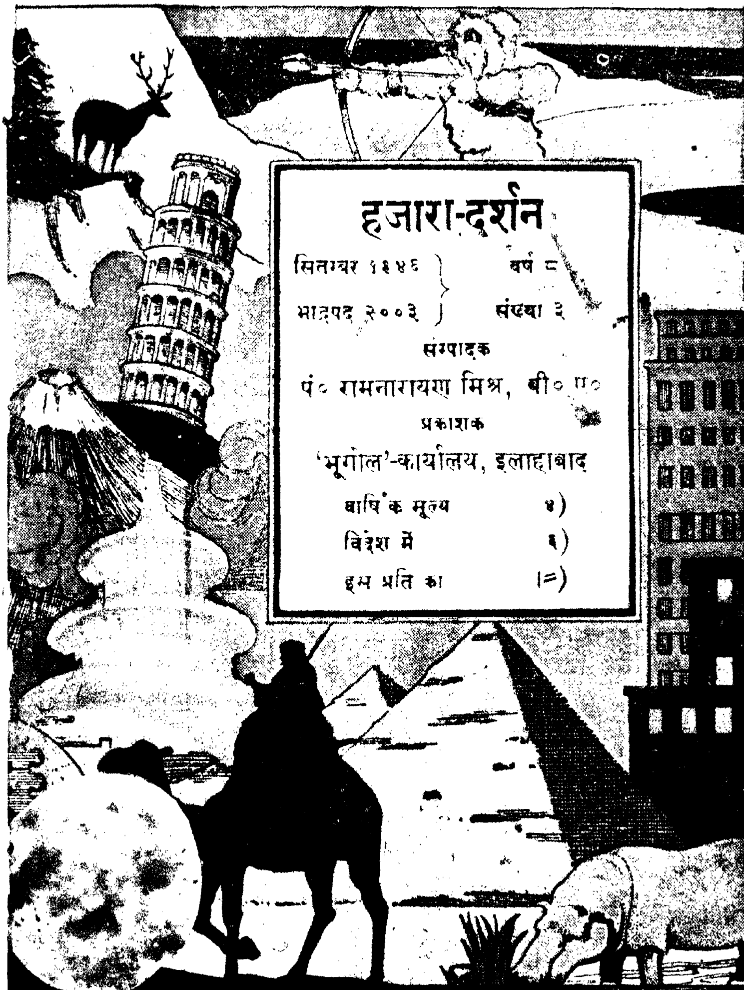
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—८१



हजारा-दर्शन

सितम्बर १९४६ } वर्ष ८
भाद्रपद २००३ } संख्या ३

संपादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

हाल में हज़ारा ज़िले के हिन्दू और सिक्ख निवासियों पर लूट मार की जो आपत्ति आई उससे सारे भारतवर्ष का ध्यान उस कोने में बसे हुए सीमा प्रान्त के ज़िले की ओर खिंच गया। इसी से देश दर्शन के पाठकों को इस ज़िले का दर्शन कराने का प्रयत्न किया गया है।

हज़ारा ज़िला हिमालय की तलहटी में ब्रिटिश भारत के उत्तरी सिरे पर ३३°४४' और ३५°१०' उत्तरी अक्षांशों और ७२°३३' और ७४°६' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थिति है। यह जिह्वाकार जिला दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक १२० मील लम्बा है। इसके सिरे पर कगान घाटी है जो काश्मीर और पहाड़ी प्रदेश के बीच में स्थित है। इसका जल ऊपरी सिन्ध में बह जाता है, ज़िले का दक्षिणी भाग ६० मील, मध्यवर्ती भाग ४० मील और कगान घाटी का उत्तरी भाग केवल १५ मील चौड़ा है। इस जिले में मान्सेहरा, एबटाबाद और हरीपुर की तीन तहसीलें हैं। मध्यवर्ती भाग के पश्चिम

में ऊपरी या तानावाल प्रदेश हैं। इस ज़िले का क्षेत्रफल ३०६२ वर्गमील है। इसी में तानावाल का २०४ वर्गमील भी शामिल है।

इस ज़िले के पूर्व में काश्मीर और पूंच राज्य हैं। इस ज़िले और काश्मीर के बीच में झेलम और कुन्हार नदियां प्राकृतिक सीमा बनाती हैं। उत्तरी सिरे पर एक पहाड़ी सोमा बनाती है। पूंच राज्य और हज़ारा के बीच में झेलम नदी बहती है। जिले के पश्चिम में कोहिस्तान अलाई नन्दिहार, पैशी और टीकरी के स्वाधीन कबीलों के प्रदेश हैं। इसी ओर काला पर्वत है। अधिक दक्षिण की ओर सिन्ध नदी इस ज़िले को उतमन ज़ई कबीलों के प्रदेश और पेशावर ज़िले की स्वाबी तहसील से अलग करती है। उत्तरी भाग में चिलास और कोहिस्तान है। दक्षिण की ओर पंजाब के अटक और रावलपिंडी जिले हैं।



सूचना

पर्वत—हज़ारा एक पहाड़ी ज़िला है। पर्वत श्रेणियां ज़िले के दोनों ओर उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम को चली गई हैं। पूर्व की ओर प्रधान पहाड़ी कुन्हार और झेलम के दाहिने किनारे पर खड़ी हुई है। यही हज़ारा और काश्मीर के बीच में सीमा बनाती है। यह मरी और खानपुर की पहाड़ियों के पास समाप्त हो जाती है। उत्तरी सिरे पर इसकी चोटियां १७००० फुट से अधिक ऊँची हैं। मध्यवर्ती भाग में यह डुंगा गली नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ इसकी चोटियां ७००० से १०,००० फुट तक ऊंची हैं। खानपुर के पास इसकी सबसे ऊंची श्रीबंग चोटी केवल ५६५० फुट ऊंची है। दक्षिणी भाग में प्रधान श्रेणी से दोनों ओर पहाड़ियां फैली हुई हैं। पश्चिम की ओर पहाड़ियां अधिक लम्बी हैं। इनके बीच में कई घाटियां घिरी हुई हैं। यही लोरा, नारा और खानपुर के प्रदेश हैं।

एक दूसरी श्रेणी कुन्हार नदी के बायें किनारे पर चली गई है। माली का पर्वत नाम की इसकी चोटी १७,००० फुट ऊंची है। यही इस ज़िले की सब से ऊँची चोटी है। कुन्हार और झेलम के संगम से

पहले यह पर्वत श्रेणी काश्मीर राज्य में पहुँच जाती है। मूसा का मुसल्ला नाम चोटी के पास पश्चिमी पर्वत श्रेणी, पूर्वी पर्वत श्रेणी से अलग हो जाता है। वह भोगरमांग और कोंश घाटियों के उत्तरी सिरे के पास होकर यह दोनों को अलग कर देती है और अगोर को घेरती है। इसकी पश्चिमी श्रेणी काला पर्वत (८,००० फुट) बनाती हैं। तानावाल प्रदेश में पहाड़ियों का जाल सा बन जाता है। इन्हीं को चीर कर सिरान नदी सिन्ध नदी में मिल जाती है। भिंगरा (८५०० फुट) और बिलियाना (६१६२ फुट) यहां सब से ऊंची चोटियां हैं। सिरान नदी के दक्षिण-पश्चिम में सिन्ध नदी के किनारे गन्दगर पहाड़ियों में इस श्रेणी का अन्त हो जाता है। यहां इसकी ऊंचाई ४००० फुट से कुछ ही अधिक है।

मैदान—पहाड़ों के बीच में पूर्व और पश्चिम की ओर छोटे छोटे मैदान हैं। मानसेहरा तहसील का पखरी मैदान समुद्र-तल से ३००० फुट ऊँचा है। यह उत्तर से दक्षिण तक ११ मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम तक १० मील चौड़ा है। सिरान नदी इसके

पश्चिमी भाग को सींचती है। यह मैदान बड़ा उपजाऊ है। इस मैदान के दक्षिणी सिरे पर मानसेहरा नगर है। इसके आगे छोटी पहाड़ियों को पार करने पर मङ्गल मैदान आ जाता है। यहां गहरा मटियार है। पर यहां सिंचाई की सुविधा नहीं है। यह ५ मील लम्बा और ३ मील चौड़ा है। इसके दक्षिणी सिरे पर ओराश या राश का मैदान है। यह ४ मील लम्बा और ४ मील चौड़ा है। ऐसा जान पड़ता है मानो यहाँ पहले एक झील रही हो। इसके बीच वाले भाग में इस समय भी दलदल है। इसके बहुत बड़े भाग में मक्का की खेती होती है। एबटाबाद की छावनी इसके दक्षिणी सिरे पर स्थित है। मङ्गल और राश मैदान दोनों ही समुद्रतल से ४००० फुट ऊंचे हैं। राश मैदान के दक्षिण में गहरा उतार है। यहीं डोर घाटी है। डोर घाटी और हरीपुर को मिला कर जो मैदान बनता है वह ज़िले का सबसे बड़ा मैदान है। जहां डोर नदी पहाड़ियों से नीचे उतरती है वहीं से यह मैदान आरम्भ होता है। इसके एक ओर नारा और खानपुर की पहाड़ियां हैं। दूसरी ओर तानावाल और गन्दगर की पहाड़ियां हैं। यह मैदान ज़िले की दक्षिणी सीमा तक फैला हुआ है। आरम्भ

में यह तंग है पर बीच वाले भाग में हरीपुर के पास यह १२ मील चौड़ा है। उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक यह ३० मील लम्बा है। इसकी ऊंचाई ३००० फुट रह गई है। इसके ऊपर और उत्तरी भाग में डोर नदी बहती है। यह दोनों किनारों की भूमि को सींचती है। निचले सिरे की भूमि बड़ी समतल है। यहां सिचाई की सुविधा नहीं है। जहाँ तहाँ गहरे खड्ड (सूखे नाले) बन गये हैं।

इन तीन मैदानों के अतिरिक्त कुछ छोटे मैदान हैं। हरीपुर तहसील के दक्षिणी-पूर्वी कोने पर हरों के निकास के निकट खानपुर पंजकाठा का मैदान है। यहाँ सिंचाई खूब होती है। गन्दगर श्रेणी और सिन्ध नदी के बीच में खारी का मैदान है। इसके उत्तर में सिरान और सिन्ध नदी के संगम के पास तारबेला का छोटा सा उपजाऊ मैदान है। धान का ऊँचा दलदली मैदान नारा पहाड़ियों से घिरा हुआ है। ऊपरी हरों की धूंध शाखा की घाटी एक खुला हुआ मैदान है। इसके बीच बीच में छोटी पहाड़ियाँ हैं। मान्सेहरा तहसील के उत्तरी-

पश्चिमी भाग में कोंश घाटी के सिरे पर चन्तर का ५५०० फुट ऊँचा मैदान है।

नदियाँ—हज़ारा ज़िले की प्रधान नदियाँ सिरान, डोर और हर्रो हैं। सिन्ध नदी ३० मील तक पश्चिमी सीमा और झेलम नदी २५ मील तक ज़िले की पूर्वी सीमा पर बहती है। सिरान नदी भोगरमाँग घाटी के उत्तर में निकलती है और पखली के पश्चिमी घाट में होकर बहती है। फिर यह तानावाल पहाड़ियों में छिप सी जाती है। फुलरा और अम्ब प्रदेशों में कुछ दूर बहने के बाद यह हरीपुर मैदान के एक कोने में प्रवेश करती है। उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़कर तारबेला के पास यह सिन्ध नदी से मिल जाती है। यहाँ नदी प्रायः ८० मील लम्बी है और ६२७३ एकड़ ज़मीन सींचती है। पर बाढ़ को छोड़ कर शेष सब महीनों में यह कई स्थानों में पांज हो जाती है। डोर नदी अधिक छोटी है। इसमें पानी भी कम रहता है पर यह बड़ी तेज़ नदी है। यह डूँगागली पहाड़ी के उत्तरी सिरे से निकलती है। यह हरीपुर मैदान में होकर बहती है और तारबेला से ५ मील ऊपर गन्दगर पर्वत के उत्तरी-पूर्वी सिरे के

पास सिरान नदी से मिल जाती है। यह नदी ४० मील लम्बी है और प्रायः १५,००० एकड़ ज़मीन सींचती है। साधारण वर्षों में इसमें पानी बराबर बना रहता है पर सूखा पड़ने पर इसका पानी मार्ग में ही सिंचाई में खर्च हो जाता है और यह सिरान नदी तक नहीं पहुँच पाती है। इसके पड़ोस में हल्दी और ईख बहुत होती है।

हर्रो—डूंगा गली पहाड़ी के दक्षिणी सिरे से निकलती है। इस नदी की दो शाखायें हैं। पूर्वी शाखा धूँद और पश्चिमी शाखा करेल हर्रो कहलाती है। यह उन फिरकों के नाम हैं जिनके प्रदेश में होकर यह शाखा नदियाँ बहती हैं। खानपुर प्रदेश के सिरे पर दोनों शाखायें एक दूसरे से मिल जाती हैं। एक गहरी नद-कन्दरा में होकर बहने के बाद यह खानपुर पंजकाठा के पास बाहर निकलती है। अटक तहसील की सीमा के पास तक इस नदी की लम्बाई प्रायः ५० मील है। यह ३२०० एकड़ भूमि सींचती है। इस ज़िले के गाँवों के खेतों को सींचने के लिये इसमें काफी पानी रहता है। पर अटक तहसील के गावों के खेतों को सींचने के लिये इसमें पानी कम रह जाता है।

हजारा-दर्शन

कुन्हार—कुन्हार नदी कगान घाटी के लू लू सर झील से निकलती है। ११० मील बहने के बाद पट्टन के पास यह झेलम नदी से मिल जाती है। इस नदी में पानी तो बहुत रहता है पर सींचने के लिये पड़ोस में समतल भूमि नहीं है। इसकी धारा भी कहीं अत्यन्त तेज़ और कहीं अत्यन्त गहरी है। इसके अतिरिक्त यहाँ छोटी छोटी अनेक धारायें हैं। इनसे २४,००० एकड़ भूमि सींची जाती है। सूखे नाले (कस्सी) और भी अधिक हैं। इनकी गहरी तली में पत्थर बिछे हैं। केवल प्रबल बाढ़ में वे बड़ी तेज़ी से बहते हैं।

कगान घाटी में अनेक सर (झील) हैं। लूलू सर सब से बड़ा है। यह डेढ़ मील लम्बा और ३०० गज़ चौड़ा है। दूदी बच सर और सफर मलूक सर भी कुछ बड़े हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ और भी बहुत सर हैं। इनका दृश्य बड़ा मनोहर है। इनकी उँचाई ६००० फुट से ११,००० फुट है। कोई कोई ५० गज़ गहरा है। यह बर्फीली पहाड़ियों से घिरे हुये हैं। इनके विषय में बड़ी मनोरंजक कथायें हैं। कहते हैं जब अकबर की अन्धी

लड़की ने लूलू सर में स्नान किया तो उसकी आँखें अच्छी हो गईं। सफर मलूक परियों का सर (झील) है। कहते हैं दिल्ली के एक शाहजादे ने स्वप्न में एक अप्सरा (परी) को देखा। ज्योतिषियों ने बतलाया कि यदि वह बारह वर्ष पर्वतों से घिरे हुये सर के किनारे तपस्या करे तो उसकी इच्छा पूरी होगी। उसने इसी (सफर मलूक) सर के किनारे तपस्या की। अन्त में ३०० परियों के साथ रानी यहाँ स्नान करने आई। कपड़े किनारे पर छोड़कर वे सब नंगी स्नान करने के लिये सर में घुस गईं। शाहजादे ने अवसर पाकर रानी के कपड़े ले लिये। दूसरी परियाँ चौंक कर अपने कपड़े लेकर भाग गईं। रानी अकेली नंगी पानी में रह गई। अपने साथ ब्याह करने की प्रतिज्ञा करा के शाहजादे ने उसे कपड़े दिये। फिर दोनों दिल्ली को लौटे और वहाँ आनन्द से रहने लगे।

भूगर्भ—प्रस्तर भ्रंश से हजारा ज़िला चार भागों में बट गया है। उत्तर-पश्चिम में रूपान्तरित (मेटा मार्फिक) शिलायें हैं। यह भाग एबटाबाद और डोर घाटी के उत्तर पश्चिम में है। एबटाबाद के उत्तर-पूर्व में

पुरानी स्लेट की चट्टाने हैं। इनके ऊपर नवीन शिलायें बिछी हैं। इनके आगे चूने के पत्थर की शिलायें अथवा वे नई चट्टाने हैं जिनकी उत्पत्ति समुद्र से हुई है अथवा जो ऊपर उठने के पूर्व समुद्र की तली में बिछी थी। अन्त में तटों का बलुआ पत्थर का क्षेत्र है जो रावलपिंडो के पठार तक फैला हुआ है।

प्रकृति दृश्य की सुन्दरता में भारतवर्ष के बहुत थोड़े ज़िले हज़ारा से टक्कर ले सकते हैं। यहां की सुन्दरता दृश्य की विभिन्नता में है। सिन्ध नदी के समीप कुओं का प्रदेश है। हरों के छोटे प्रदेश में भी पानी की अधिकता है। हरीपुर के पड़ोस का प्रदेश और भी अधिक उपजाऊ है। इसके दक्षिण में चपटा चौड़ा सूखा मैदान है जहां सिंचाई के साधन नहीं हैं। पश्चिम की ओर पंजाब के मैदान के समान दृश्य है। इन मैदानों को घेरने वाली सूखी नंगी छोटी पहाड़ियां दूर से बड़ी सुन्दर दिखाई देती हैं। ऊँची पहाड़ियों के ढाल देवदारु के पेड़ों से ढके हैं। अधिक ऊँची चोटियां बरफ से ढकी हैं। यहीं तेज़ नदियां, जल प्रपात और शान्त सर (झील) हैं। गांव प्रायः दुर्गम उंचाई पर बसे हैं। गांवों के पड़ोस में तरह तरह के सुन्दर वृक्ष हैं।

जलवायु

इस जिले में कई प्रकार की जलवायु है। हरीपुर के पड़ोस की जलवायु उत्तरी पंजाब के समान है। केवल अन्तर यह है कि यहाँ पंजाब की अपेक्षा गरमी की ऋतु कुछ देर से आरम्भ होती है और पहले ही समाप्त हो जाती है। मई और सितम्बर महीने कुछ ठंडे ही रहते हैं। निचली पहाड़ियों में भी विकराल गरमी पड़ती है। राश और पखली के मैदान कुछ अधिक ठंडे रहते हैं गरमी की ऋतु असह्य नहीं होती है। जुलाई, अगस्त में सब से अधिक गरमी पड़ती है। हरीपुर की अपेक्षा यहां सरदी में कहीं अधिक जाड़ा होता है। पाला अक्सर पड़ता है। कभी कभी बरफ भी गिर जाती है। जनवरी, फर्वरी में प्रायः वर्षा भी हो जाती है। इन सब बातों से जनवरी और फर्वरी के महीने अच्छे नहीं रहते हैं। पर शेष महीनों की जलवायु बड़ी मनोहर होती है। जिले के अधिक ऊंचे भागों में सरदी में इतनी अधिक बरफ गिरती है और ऐसा कड़ा जाड़ा पड़ता है कि सरदी की ऋतु में वहां कोई नहीं रहता है। पर वहीं गरमी की ऋतु इतनी स्वास्थ्यप्रद और मनोहर हो जाती है कि मैदान को विक-

शाल गरमी से बचने के लिये यहां बहुत से लोग आ जाते हैं।

ज़िले कुछ अधिक ऊंचे, कुछ नीचे हैं। कुछ वनस्पति से ढके हैं कुछ वीरान हैं इससे ज़िले के कुछ भागों में अधिक वर्षा होती है। औसत से वर्ष भर में हरीपुर में ३० इंच, मानसेहरा में ३६ इञ्च और एबटाबाद में ४७ इञ्च वर्षा होती है। हरीपुर तहसील के दक्षिणी भाग में बहुत कम वर्षा होती है। खानपुर में और अधिक वर्षा होती है। एबटाबाद तहसील डोर के मैदान और निचले तानावाल में कम वर्षा होती है। डूंगा गली श्रेणी के गांवों में शहर से अधिक वर्षा होती है। डूंगा गली में ६० या ७० इञ्च वर्षा हो जाती है।

मानसेहरा से उत्तर की ओर पखली मैदान में अधिक वर्षा होती है। पर अधिक उत्तर में कगान घाटी में पहुँचते पहुँचते मानसूनी हवायें सूख सी जाती हैं और गरमी की ऋतु में बहुत कम पानी बरसाती हैं। पर शीतकाल में बरफ बहुत गिरती है।

———

वनस्पति

हज़ारा के निचले मैदान की वनस्पति समीपवर्ती पंजाब के मैदान के समान है। इस प्रदेश में खेती होती है। वसन्त ऋतु में खेती के साथ छोटे छोटे पौधे उग आते हैं। बड़े वृक्षों में शीशम, शहतूत, सिरस, सेमल, प्रधान हैं। कई कांटेदार झाड़ियां भी पाई जाती हैं। निचली पहाड़ियां समुद्र-तल से ३००० फुट से लेकर ६००० फुट तक ऊँची हैं। आज कल यह प्रायः नंगी हैं। केवल कहीं कहीं सूखी मुरझाई हुई झाड़ियाँ मिलती हैं। पर पहले यहां चीड़ का वन था। आज कल यह वन एक दो स्थानों में ही देखने को मिलता है। जो पहाड़ी पखली मैदान को कुन्हार घाटी से अलग करती है उस पर इसी प्रकार का वन है। पर प्रतिवर्ष घास के जलवा डालने, और असंख्य भेड़ बकरियों के नये पौधों के चरने और बड़े पेड़ों के ईंधन के लिये कट जाने से वन नष्ट हो गया। आज कल जहां कहीं वन शेष रह गया है वहां चीड़ सिन्दूर जंगली जैतून अंजीर के पेड़ हैं। गाँवों के पड़ोस में बेर, नाशपाती, सेव, खुबानी, आदि फलों के पेड़ हैं। यहां तरह तरह के फूल वाले पौधे और झाड़ियाँ हैं।

वर्षा के बाद तरह तरह के फूल खिल आते हैं। ६००० फुट से ६००० फुट ऊंचे पहाड़ी ढाल वन से ढके हैं। देवदार, नीला चीड़, (ब्यार) प्रधान है। सिन्दूर को जला कर लकड़ी का कोयला बनाया जाता है। छोटे छोटे पौधे भी बहुत हैं।

६००० फुट से अधिक ऊँचाई पर अल्पस प्रदेश की वनस्पति है। यहां शीतकाल में बरफ जमी रहती है। गरमी की ऋतु में बरफ पिघल जाती है और छोटे छोटे पौधे उग आते हैं।

पशु—वन प्रदेश में हिरण, लाल और काला भालू, ७००० फुट से अधिक उंचाई पर पाया जाता है। कभी कभी मक्का के पकने पर यह नीचे उतर आता है। चीता नष्ट हो गया है। तेंदुआ भी बहुत कम मिलता है। ऊपरी ढालों पर मुश्की या कस्तूरी हिरण पाया जाता है। झीलों में तरह तरह की मछलियाँ पाई जाती हैं। पहाड़ी गांवों में शहद की मक्खी पालने का काम बहुत होता है।

कृषि—इस ज़िले की २४ प्रतिशत (४,३०,०००) भूमि खेती के काम आती है। मैदानी भाग में खेती के

प्रायः सभी भूमि में कुछ न कुछ उगाया जाता है। पहाड़ी ढालों पर आजकल भी बहुत सी भूमि ऊसर पड़ी हुई है। जिन भागों में सिंचाई की सुविधा है उनमें खेत बड़ी सावधानी से जोते बोये जाते हैं। पखली और बकोट में धान बड़े परिश्रम से उगाया जाता है। डोर घाटी के किनारों पर ईख और हल्दी भी बड़ी सावधानी से उगाई जाती है। हरीपुर के पश्चिम में जिन भागों में सिंचाई नहीं होती है उनमें भी कुछ खेती होती है। पर्याप्त वर्षा और उपजाऊ भूमि होने के कारण थोड़े परिश्रम से ही अच्छी फसल होती है।

मैदानी भाग में लोग अच्छी दशा में हैं। पर पहाड़ी भाग में खेतों को समतल करने और जीनेदार पत्थर की मेंड़ें बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। पथरीली भूमि में खाद भी देनी पड़ती है। तानावाल, बधनक और मिगवानी आदि गन्दगर श्रेणी के प्रदेशों के गांवों में खेत बहुत छोटे हैं। यहां के किसान बड़े परिश्रमी हैं पर वर्षा की कमी से इधर बड़ी गरीबी है। ऊँचे भागों में शीतकाल में इतनी ठंड पड़ती है कि रबी की फसल नहीं हो सकती। यहाँ केवल खरीफ की फसल

होती है। तीन चार हज़ार फुट ऊँचे शीतोष्ण भागों में भी खरीफ की फसल प्रधान है पर रबी की भी कुछ फसल हो जाती है। ३००० फुट से नीची पहाड़ियों और मैदानों में रबी की फसल अधिक महत्व की है। औसत से ज़िले की समस्त खेती में ६० प्रतिशत रबी और ४० प्रतिशत खरीफ की फसल रहती है। कुछ भागों में वर्ष में दो फसलें हो जाती हैं। तानावाल में पहाड़ी धाराओं ने कांप या कछारी मिट्टी गिराकर उपजाऊ नेगर, भूमि बना दी है। इस नेगर भूमि और पखली की मैरा भूमि में बिना खाद डाले वर्ष में दो फसलें होती हैं। अधिक खराब ढालों पर दो तीन वर्ष में केवल एक फसल होती है। इस जिले के प्रायः १० प्रतिशत खेत सींचे जाते हैं। पत्थर और झाड़ियों के बाँध बनाकर पहाड़ी धाराओं का पानी रोक लिया जाता है। बड़ी धाराओं को काठा और छोटी को काठी कहते हैं। इनके बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। कभी कभी दो या अधिक गांव मिलाकर इन्हें बनाते हैं ऐसी दशा में ऊपर वाला गाँव जितना पानी चाहता है उतना ले लेता है फिर वह शेष पानी नीचे वाले गाँव के लिये जाने देता है। कहीं कहीं गांव वाले अपना अपना पानी लेने के लिये घंटे

या दिन नियत कर लेते हैं। कुछ घंटे या एक दिन एक गांव वाले अपने खेतों में पानी ले जाते हैं। शेष घंटे या दूसरे दिन दूसरे गांव वाले पानी लेते हैं। हरीपुर के पास डोर नदी के रंगीला ताल से कई गांवों को पानी जाता है। एक गांव के किसान बारी बारी से अपने खेतों को सींचते हैं। जिसका खेत मार्ग में पहले पड़ता है वह पहले अपने खेत को सींचता है। जिसका खेत सब से अधिक दूर होता है वह अन्त में अपना खेत सींचता है। अधिक व्यय करके गहरे नालों में बांध बना कर जिले में सिंचाई बढ़ाई जा सकती है।

कुएँ प्रायः हरीपुर तहसील में ही हैं। कुओं की दीवारें पत्थर की बनाई जाती हैं। एक कुआं बनाने में पांच छः सौ रुपये लगते हैं। एक कुआं चार पांच एकड़ भूमि लेता है। इससे सींचे हुये खेतों में तरकारी (शाक) तम्बाकू उगाई जाती है पूरे ज़िले में चार पांच सौ कुओं से अधिक नहीं हैं। कुओं से सींची भूमि को चाही कहते हैं। जिसमें अधिक खाद रहती है उसे बाग कहते हैं। धान उगाने वाली अनुकूल भूमि को होतार कहते हैं। पथरीली थोड़े पानी वाली भूमि बरंगर आबी कहलाती

है। जो पठारी भूमि सूखी धाराओं की तली में होती है उसे घरेरा आबी कहते हैं।

बिना सींची भूमि बारी या चारी कहलाती है। गहरी तली में स्थिति भूमि को कुण्ड कहते हैं। मानसेहरा में कुण्ड को बेला कहते हैं चिकनी मिट्टी और बालू मिली हुई भूमि मैरा कहलाती है। ऊंची नीची खराब पथरीली भूमि राकड़ कहलाती है। गांव से दूर जो अधिक उपजाऊ मिट्टी बहर्दी आबी कहलाती है। इसमें अनाज उगाया जाता है। होतार भूमि में अनाज काटने के बाद गेहूँ या जौ उगाया जाता है।

बन्ना वह ऊसर भूमि है जो एक खेत को दूसरे खेत से अलग करती है। इसमें प्रायः घास ही होती है। ढाका पहाड़ी (राख) भूमि में भी प्रायः घास ही होती है। इसे प्रायः ढाका चरागाह कहते हैं। जहां पहाड़ी ऊसर भूमि में पेड़ होते हैं उसे ढाका दरख्तान कहते हैं। शीतोष्ण भाग में रबी की फसल की जुताई सितम्बर मास में आरम्भ होती है और नवम्बर में बोने का काम समाप्त हो जाता है। इस बीच में वर्षा न होने से खेत ठीक बोये नहीं जा सकते। निचले भागों में जनवरी

तक खेत बोये जाते हैं। अप्रैल, मई या जून में कटाई होती है। पहले सरसों, फिर जौ अन्त में गेहूँ काटा जाता है। छः या सात हज़ार फुट ऊंचे भागों में गेहूँ अगस्त मास में बोया जाता है। यहां इसे पकने में ग्यारह महीने लग जाते हैं। खरीफ की फसल अप्रैल से अगस्त तक बोई जाती है। और सितम्बर से दिसम्बर तक काटी जाती है। ईख मार्च में बोई जाती है। ईख और हल्दी की फसल फर्वरी में तयार होती है। मक्का इस जिले के लोगों का प्रधान भोजन है, खेती की ४२ प्रतिशत भूमि में मक्का उगाई जाती है। जब मक्का पहले बोई जाती है तब इसे अगेतरी कहते हैं। जब पीछे बोई जाती है तब इसे पिछेतरी कहते हैं। ठंडे भागों में यह पहले ही अप्रैल या मई में बोई जाती है। पिछेतरी मक्का जून, जुलाई या अगस्त में बोई जाती है। एक प्रकार की मक्का निचले उपजाऊ भागों में ६० दिन में तयार हो जाती है। इसे साठी कहते हैं। यहां देशी (पीली) और अमरीकन (सफेद) दोनों प्रकार की मक्का होती है। हरीपुर के अच्छे भागों में एक एकड़ में ३० या ४० मन मक्का होती है। सूखे भागों में केवल

तीन चार मन होती है। धान बहुत थोड़े (३ प्रतिशत) भागों में होती है। पखली और सिरान में अच्छा धान होता है। खरीफ की फसल में बाजरा, ज्वार, कंगनी कपास, हल्दी, ईख, आलू, उर्द और मूंग प्रधान हैं।

रबी की फसल की २५ प्रतिशत भूमि में गेहूँ होता है, १० प्रतिशत भूमि में बाजरा होता है। कुछ चना और मसूर भी उगाई जाती है।

इनके अतिरिक्त कई प्रकार के शाक (तरकारी) सन्तरा बेर, सेव लोकाट, सन्तरा, अगूर, नाशपाती आम आदि फल उगाये जाते हैं। जानवरों को खिलाने के लिये घास बहुत से स्थानों में होती है। जो अन्न तयार होता है वह पड़ोस की पहाड़ी धाराओं के पानी के ज़ोर से पनचक्कियों से पीसा जाता है। यदि किसी धारा में एक महीने भी काफी पानी रहता है तो वहां जान्दार तयार कर दिया जाता है। धान कूटने और तम्बाकू कूटने का काम भी पनचक्कियों से लिया जाता है। जिले में प्रायः ४००० जान्दार (आटा पीसने की पनचक्कियां) और २०० पेकोह या धान कूटने की पनचक्कियां हैं।

कुछ लोग अपने खेत के मालिक हैं। कुछ लोग

अपना खेत लगान पर उठा देते हैं। कुछ लोग उपज का चौथा या पांचवां भाग देकर साझीदार (हाली) मज़दूर लगा लेते हैं। जमींदारों और किसानों के सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं।

इस जिले के गाय, बैल अच्छे नहीं हैं। केवल हरीपुर तहसील में इनकी नसल कुछ अच्छी है। पर भैंसें दूध देने वाली होती हैं भेड़ बकरी बहुत हैं। पहाड़ी भागों में घोड़े और खच्चर भी पाये जाते हैं। मैदानी सूखे भाग में हरीपुर तहसील में ऊँट और गधे भी पाले जाते हैं।

खनिज—सिन्ध नदी की बालू को धोकर कुछ लोग सोने के कण निकाल लेते हैं। चूने का पत्थर सब कहीं बहुत है। मोटी स्लेट भी बहुत हैं। मीरनजानी के पूर्वी ढालों पर लोहा पाया जाता है। एबटाबाद के पूर्व की पहाड़ियों में कुछ कोयला मिलता है।

हज़ारा ज़िले में मोटा खद्दर अधिक बुना जाता है। यहां की फूलकारी भी प्रसिद्ध है। गेहूँ के तिनकों से टोकरियां बनाई जाती हैं। सुनार सोने चांदी के आभूषण बना लेते हैं।

व्यापार—इस जिले में कपड़ा, नमक, तम्बाकू और अनाज बाहर (पंजाब) से आता है। जो अनाज यहां पैदा होता है। वह काफी नहीं होता है। यहाँ से कुछ चावल, आलू, हल्दी और गुड़ बाहर भेजी जाती है। फल भी बाहर जाते हैं। मान्सेहरा से खूट (एक प्रकार की सुगन्ध देने वाली) जड़ बाहर भेजी जाती है। यहां के बैल, भेड़, बकरे भी पेशावर, रावलपिंडी और मरी के कसाई घरों में कटने के लिये जाते हैं। ऊन, बाल, चमड़ा और घी भी बाहर जाता है। मान्सेहरा में बाकी, एबटाबाद में नवां शहर और हरीपुर प्रधान व्यापार केन्द्र हैं।

आने जाने के मार्ग—नार्थ वेस्टर्न रेलवे की एक शाखा हरीपुर हवेलियां में समाप्त होती है। हसन अब्दाल (पंजा साहबा) से एक पक्की सड़क हरीपुर एबटाबाद मान्सेहरा से होती हुई गढ़ी हबीबल्ला के पास कुन्हार को पार करती है और दमेल के पास रावलपिंडी से श्री नगर को जाने वाली सड़क से मिल जाती है। इस ज़िले में पक्की सड़क प्रायः १०० मील है। कच्ची सड़कें बहुत १००० मील लम्बी हैं उनमें कुछ सेना विभाग और कुछ डिस्ट्रिक्टबोर्ड के हाथ में हैं।

हरीपुर से खानपुर होकर रावलपिंडी की सीमा तक एक सड़क २४ मील लम्बी है। हरीपुर से सिन्ध नदी के किनारे गाजी तक १५ मील लम्बी सड़क है। हरीपुर से मान्सेहरा तक ४८ मील लम्बी सड़क है।

निवासी—इस ज़िले को जन संख्या प्रायः ६ लाख है। अधिकतर लोग गांवों में बसे हैं। जिले में केवल ४ कस्बे हैं। यह एबटाबाद नवांशहर, हरीपुर और बाका। इन कस्बों में ज़िले की पांच प्रतिशत जन संख्या है। गांवों की संख्या प्रायः साढ़े नौ सौ है। प्रति वर्ग मील में प्रायः २०० मनुष्य रहते हैं। पर जिले के बहुत बड़े भाग में ऐसे उजाड़ पहाड़ हैं जहां शीतकाल में कोई प्राणी नहीं रह सकता इसलिये यदि खेती के योग्य बसे हुये भागों को ही लें तो जनसंख्या की सघनता प्रतिवर्ग मील में प्रायः ८०० है। स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से कुछ कम है। हज़ारा जिले का किसान मुकद्मे में बहुत रुपया फूँक देता है। कस्बों को छोड़ कर चोरी बहुत कम होती है। बहुत से थानों में पुलिस को कोई काम नहीं रहता है। कभी भी क़तल या झगड़ा होता है तो यह शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

हज़ारा-दर्शन

अवान्, बम्बा, बीब, धूंद, दिलज़क, गक्खर, गूजर, करल कुरेश, मलियार, मिशवानी, मुगल, पठान, राजपूत, सरार, स्वाती, सैयद तरीन, तनावली, तुर्क कबीले खेती का काम करते हैं। बीब लोग बहुत थोड़े हैं। यह एबटाबाद तहसील के एक दो गांव में बसे हैं। राजपूतों की संख्या प्रायः ५००० है। यह जिले भर में फैले हुये हैं। असली पठानों में सब से अधिक संख्या में जातून हैं। यह लोग मंगल प्रदेश, राश और रजोइया के मैदान में बसे हैं। इनकी संख्या १२,००० है। १७ वीं शताब्दी में वे सिन्ध नदी को पार करके हज़ारा ज़िले में चले आये। तरीन लोग हज़ारा जिले के कुछ गांवों में बसे हैं। दिलज़क लोगों की संख्या प्रायः २५०० है। बाबर के समय में यह अफ़गानिस्तान से भागकर यहां चले आये। इस कबीले के लोग लूट मार में लग गये। इससे इनपर हमले किये गये और इनकी संख्या कम हो गई। उत्तम वज़ई लोगों की संख्या भी २५०० है। यह यूसुफज़ई और सिन्ध के चार स्वाधीन प्रदेश में रहते हैं। यह तार बेला और डोर के सींचे हुये प्रदेश में रहते हैं। तारखेली लोग खारी प्रदेश में रहते हैं। स्वाती लोगों की संख्या ३५,००० है।

पहले यह स्वात घाटी में रहते थे। मिशवानी ४००० की संख्या में हैं। वे सिरकोट, कुंडी, अमरखाना और गडवालियान गांवों में गन्दगर के उत्तरी पूर्वी सिरे पर बसे हैं। यह सैय्यद हैं। तनावली लोगों की संख्या ६०,००० है। इनमें कुछ ऊपरी तनावलों के स्वाधीन प्रदेश में बसे हैं।

तुर्क लोगों के पूर्वज तैमूरलंग के समय में हज़ारा ज़िले में बस गये थे। इनकी संख्या प्रायः ४००० है। अवान लोग जिले भर में फैले हुये हैं और दूसरे फिरकों से मिल गये हैं। इनकी संख्या ६१,००० है। यह लोग हट्टे कट्टे और सुन्दर किसान हैं। गूजर लोग इस जिले के सब से पुराने निवासी हैं।

इनकी संख्या सब से अधिक (प्रायः १ लाख) है। यह हरीपुर तहसील में ज़मींदार और मान्सेहरा में किसान हैं। कर्रल लोग अधिकतर नारा प्रदेश में रजोइया मैदान और डूंगागली श्रेणी के बीच में रहते हैं। इनकी संख्या १६,००० है। पहले यह हिन्दू थे फिर मुसलमान हो गये।

धूँद भी पहले हिन्दू थे पर वे अपने को कुरेशी

मुसलमान बतलाते हैं। सर्रार लोग धूँद लोगों से व्याह सम्बन्ध करते हैं। वे पहले हिन्दू थे और पाकपट्टन (पंजाब) से आये थे। इनकी संख्या ८००० है। यह कुन्हार नदी और थंढियानी श्रेणी के बीच में बोई प्रदेश में रहते हैं। यह लोग बड़े गरीब हैं। बम्दा लोग काश्मोर में अधिक हैं। पर हज़ारा जिले को कुन्हार घाटी के एक दो ही गाँव में बसे हैं। मुगलों की संख्या ८००० है। यह जिले भर में फैले हुये हैं। मालियारी की संख्या भी प्रायः ८००० है। वे पहले माली का काम करते थे और फल तरकारी उगाते थे। इस समय भी हरीपुर मैदान के वे सर्वोत्तम किसान हैं। गक्खर लोगों का कहना है कि वे महमूद गजनवी के समय में हिन्दुस्तान में आये थे। इनकी संख्या प्रायः ५००० है। इस जिले के सैयदों की संख्या २३,००० है। वे जिले भर में फैले हुये हैं। कुरेशी लोगों की संख्या ३२०० है। यह प्रतिष्ठित लोग हैं।

इस जिले के हिन्दुओं में ब्राह्मण, खत्री और अरोरा प्रधान हैं। ब्राह्मणों की संख्या ५१०० है। पहाड़ी ब्राह्मण कुछ भिन्न हैं। खत्रियों की संख्या १२०००

और अरोरा लोगों की संख्या ४००० है। इस जिले में ९५ फीसदी मुसलमान हैं। प्रायः सभी मुसलमान सुन्नी हैं। चार प्रतिशत हिन्दू और १ प्रतिशत सिक्ख हैं। एबटाबाद में कुछ मिशनरी ईसाई बनाने का काम कर रहे हैं।

इस जिले की प्रधान भाषा हिन्द्की या हिन्द्को है। यह पश्चिमी पंजाबी, लहंडी, जाटकी या मुल्तानी की शाखा है। पेशावर जिले में यह पेशावरी कहलाती है। इसका सिन्धी से भी कुछ सम्बन्ध है। मिशवानी लोग आपस में पश्तो बोलते हैं। पहाड़ी भागों के गूजर लोग गूजरी बोलते हैं।

इस जिले के लोगों का प्रधान भोजन मक्का की रोटी और दाल है। धनी लोग मांस और घी भी खाते हैं। पहाड़ी भाग में मधु (शहद) का प्रयोग होता है। मुसलमान लोग शराब कम पीते हैं पर अफीम का प्रयोग बढ़ा चढ़ा है।

यहां के लोग सफेद, काले या नीले कपड़े पहनते हैं। मैदान के धनी लोग सफेद, मिशवानी लोग काले और पहाड़ी लोग नीले कपड़े पसन्द करते हैं। उत्तरी

घाटियों में भूरे या खाकी रंग का पट्टू बहुत प्रचलित है। ढीला पाजामा (सुथान) लम्बा अंगा, खिन्का परनी (कुरता) और पटका या पगड़ी यहां का प्रधान वस्त्र है। गरमी में चादर और सरदी में कम्बल कन्धे पर डाल लिया जाता है। कुछ पहाड़ी लोग तिनके के चप्पल और शेष सभी लोग चमड़े के जूते पहनते हैं। कीचड़ होने पर लकड़ी के पौले पहने जाते हैं दुर्गाष्टमी (कुआर) और चैत्र वैशाखी प्रतिपदा फागुन छठ श्रावण नवीं को हिन्दू लोग उत्सव मनाते हैं। दुर्गाष्टमी को (मान्सेहरा में) प्रायः १००० हिन्दू इकट्ठे होते हैं। श्रावण में कोट नजीबुल्ला में भाई कृपा राम के डेरा (मन्दिर) में पूजा करने के लिये एकत्रित होते हैं।

धमतौर में जमालगाज़ी की ज़ियारत में ईद के दिन मुसलमान और बैशाख की द्विज को प्रायः २०० हिन्दू इकट्ठे होते हैं। इसी प्रकार मंगलताल पर भी हिन्दू मुसलमान दोनों ही एकत्रित होते हैं।

हज़ारा ज़िले के सीमा प्रान्तीय फिरके पेशावर से चिलास तक हज़ारा जिले की पश्चिमी सीमा के पास कई स्वाधीन पहाड़ी कबीले बसे हुये हैं। इनका घर पहाड़ियों

की भूल भुलैयों और उन छोटी घाटियों में है जो सिन्ध नदी में गिरती है। स्वाबी तहसील की सीमा के आगे उत्तमनज़ई लोग सिन्ध नदी के दाहिने किनारे पर खब्बाल, काया और दूसरे गांवों में बसे हुये हैं। यह बायें किनारे पर बसे हुये उत्तमनज़ई कबीले के सम्बन्धी हैं।

हिन्दुस्तानी दीवाने—उत्तमनज़ई प्रदेश में तावी गांव के सामने सिताना गांव इनका आदि स्थान था। यह हिन्दुस्तानी कट्टर मुसलमान थे और बरेली के सैयद अहमद के साथ आकर सीमाप्रान्त में शक्तिशाली हो गये थे। १८३० ई० में बालाकोट में उनकी हार हुई और उनका नेता मारा गया।

अमाजई—उत्तमनज़ई के उत्तर में अमाज़ई लोग रहते हैं। अम्ब इनका प्रधान गांव है। मदखेल, हसनज़ई और अकज़ई–मदखेल सिन्ध नदी के दाहिने किनारे पर महाबन श्रेणी के उत्तरी ढालों पर रहते हैं। इसके आगे हसनजई सिन्ध नदी के दोनों किनारों पर रहते हैं। इनके उत्तर में काले पर्वत के ढालों पर अकाजई रहते हैं। यह तीनों यूसफज़ई पठानों के कबीले हैं।

हज़ारा-दर्शन

आकाज़ई के उत्तर में चिग़ारज़ई रहते हैं। काले पर्वत के पूर्वी ढालों पर परियारी सैयद रहते हैं। इनके गांव में कुछ पठान और स्वाती भी बस गये हैं।

टिकारी लोग पूर्व की ओर अग्रोर के उत्तर में एक उपजाऊ घाटी में बसे हैं। अग्रोर के उत्तरी सिरे के पास वन से ढका हुआ देशी प्रदेश है। यहीं स्वाती देश है। सिन्ध और कगान घाटी के बीच में कोहिस्तान (पर्वतीय) प्रदेश में कोहिस्तानी लोग बसे हैं। आरम्भ में वे हिंदू थे। वे गिलगिट और लदाख से मिलती जुलती भाषा बोलते हैं। इनके पूर्व में कगान की उत्तरी सीमा के पास चिलास है। यहां के लोग कोहिस्तानियों से मिलते जुलते हैं पर वे भिन्न भाषा बोलते हैं। यह लोग शांतिप्रद हैं यह भेड़ बकरी चराने या व्यापार में लगे हुये हैं।

कबीलों के लोग प्रजासत्ता या पंचायती राज्य पसन्द करते हैं। वे जीरगा में आपस के मामले तय करते हैं। हसनज़ई लोगों का एक सरदार है।

१८५१ ई० में हसनज़ई लोगों ने साल्टरेंज (नमक के पहाड़) के बड़े दो अँग्रेज अफसरों को मार डाला।

उन्होंने अंग्रेज़ों के मित्र नवाब पर चढ़ाई की। इस पर उन्हें दंड देने के लिये अंग्रेज़ी फौज़ भेजी गई है। हिन्दुस्तानी कट्टर मुसलमानों ने उनका साथ दिया। इससे उनके प्रदेश में भी इसी प्रकार की फौज भेजी गई। १८५७ में उन्होंने मरदान के कमिश्नर पर फिर हमला किया। १८५८ ई० में उनको दंड देने के लिये फिर एक सेना भेजी गई। १८६३ और १८६८ में फिर उन्हें दबाने के लिये सेना भेजी गई। बराबर इस ओर कुछ न कुछ उपद्रव होते रहे।



हज़ारा-दर्शन

पुरातत्व

ऊपरी तनावल प्रदेश हज़ारा जिले के पश्चिमी भाग के मध्य में स्थित है। इसका क्षेत्रफल २०४ वर्ग मील और जन संख्या ३२,००० है। इसमें केवल ६०० हिन्दू रहते हैं। सिरान नदी इसके एक कोने को पार करती है। वन से ढकी हुई भिन्न पहाड़ो ८५०० फुट ऊंची है। यहां अम्ब ओर फुलरा दो राज्य है।

कगान घाटी ब्रिटिश भारत के उत्तरी सिरे पर स्थित है। यह एक पच्चड़ की भांति स्वाधीन कबलों और काश्मीर राज्य के बीच में घुमी हुई है। यह ६० मील लम्बी और १५ मील चौड़ी है इसका क्षेत्रफल ८६० वर्ग मील है। इसका दृश्य बड़ा मनोहर है। यहां ७६ वर्ग मील में सरकारो वन है। २८ वर्ग मील में खेती होती है मक्का और धान प्रधान फसले हैं।

हज़ारा का प्राचीन नाम उरस या आरश है। इसी से बिगड़ कर राश (मैदान का) नाम पड़ा। सम्भवतः महाभारत कालीन उरग देश यही है।

सिकन्दर महान के समय में यह भाग उसके मार्ग से कुछ अलग पड़ता था। पर यहां के राजा असोक का उल्लेख आता है।

चन्द्रगुप्त के समय में यह जिला तक्षशिला प्रान्त का अंग बन गया। सम्राट चन्द्रगुप्त का पौत्र अशोक कुछ समय तक यहां स्वयं प्रान्तीय शासक (सूबेदार) रहा। जब वह सिंहासन पर बैठा तब उसने यहां मान्सेहरा से १ मील पश्चिम की ओर बरेरी पहाड़ी के नीचे तीन प्रसिद्ध शिलालेख खुदवाये। यह शिलायें तीन है। दो एक दूसरे के ऊपर खड़ी है। तीसरी शिला कुछ नीचे एक धारा के पास पड़ी है। बरेरी की चोटी पर पहले भी एक तीर्थ था। आज कल भी प्रतिवर्ष यहां यात्री आया करते हैं। यह शिलालेख पेशावर की सीमा के पास यूसुफ जई प्रदेश के शहबाज गाढ़ी शिलालेख से मिलाते हैं। कुछ शिलालेखों का अनुवाद इस प्रकार है।

जीवन की पवित्रता

यह शिलालेख पुण्य सम्राट प्रिय दर्शिन की आज्ञा से लिखा गया है। यहां कोई पशु बलिदान के लिये बध न किया जावे। न त्योहार के भोज हों क्योंकि सम्राट प्रिय दर्शिन को त्योहार के भोजों में कई दोष दिखाई देते हैं। फिर भी कुछ त्योहारों के भोजों में पुण्य होता

है। पहले सम्राट के रसोई घर में हजारों प्राणियों का (भोजन के लिये) बध होता था। इस समय जब कि यह लेख लिखा जा रहा है केवल तीन पशु (दो मयूर और एक हिरण) बध किये जाते हैं। हिरण का वध आवश्यक नहीं है। यह तीन पशु भी भविष्य में वध न किये जायंगे।

दूसरा लेख

सम्राट प्रिय दर्शिन के राज्य में, पड़ोस के चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र और केरल पुत्र राज्यों लंका में और यूनानी राजा एण्टिओकस और उसके करद राज्यों में सब कहीं सम्राट प्रिय दर्शिन की ओर पशुओं और मनुष्यों की चिकित्सा का प्रबन्ध है। जहां कहीं औषधि की वनस्पति का अभाव था वहां यह बाहर से लाई गई है अथवा लगाई गई है। इसी प्रकार फल और फूल भी बाहर से लाये गये और लगाये गये हैं। सड़कों पर मनुष्यों और पशुओं के प्रयोग के लिये वृक्ष लगाये गये हैं और कुएं खुदाये गये हैं।

तीसरा लेख

सम्राट प्रिय दर्शिन इस प्रकार घोषित करता है अपने शासनकाल के तेरहवें वर्ष में मैं यह आदेश देता

है। मेरे राज्य में सब कहीं काम करने वाले प्रान्तों और जिलों के सर्वोच शासक हर पांचवें वर्ष अन्य कार्य के अतिरिक्त धर्म की घोषणा के लिये साधारण सभा में एकत्रित हों। माता पिता की आज्ञा मानना, मित्रों परिचितों सम्बन्धियों और साधू ब्राह्मणों के प्रति उदारता दिखलाना शुभ कार्य है। जीव, दया, मितव्यता और कटु भाषा का परित्याग भी शुभ कर्म है। इस धर्म का आशय पंडित गण शासकों को समझा दें।

चौथा लेख

धर्माचरण

बहुत समय (कई शताब्दियों) से पशुओं का वध, प्राणियों के प्रति निर्दयता, सम्बन्धियों और साधु-ब्राह्मणों के प्रति अपमान के भाव बढ़ रहे हैं।

अब सम्राट प्रियदर्शिन के धर्माचरण से युद्ध ध्वनि के स्थान पर धर्म ध्वनि सुनाई देती है। रथ, हाथी, के जलूस दीपावलि आदि स्वर्गीय दृश्य लोगों को दिखाई देते हैं। जो धर्म कार्य पहले शताब्दियों से नहीं हुआ वही धर्म कार्य अर्थात् पशुवध त्याग, सज्जन, ब्राह्मण, साधु का सम्मान, माता पिता और वृद्ध जन

की आज्ञा पालना, सम्राट प्रियदर्शिन की घोषणा से बढ़ रहा है। इस प्रकार और अन्य कई उपायों से सम्राट प्रियदर्शिन धर्माचरण की वृद्धि करेगा।

सम्राट के पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र सदा धर्माचरण की वृद्धि करेंगे। वे स्वयं धर्माचरण करेंगे और धर्म का प्रचार करेंगे। धर्म का प्रचार सर्वोत्तम कार्य है। दुराचारी पुरुष धर्माचरण नहीं कर सकता।

धर्म कार्य की वृद्धि शुभ है। इसकी अवनति न हो यही अच्छा है। यह लेख इसी उद्देश्य से लिखा जा रहा है कि मनुष्यों की उन्नति हो अवनति न हो। यह लेख सम्राट प्रियदर्शिन की आज्ञा से उसके शासन काल के तेरहवें वर्ष में लिखा गया।

पांचवां लेख

शुभ कार्य बड़ा कठिन कार्य होता है। शुभ कार्य करने वाला बड़ा कठिन कार्य पूरा करता है। यदि मेरे पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र और उनके भावी लोग समय के अन्त तक इस मार्ग पर चलें तो अच्छा हो। पर यदि कोई मनुष्य इस आज्ञा का उलंघन करे तो अच्छा न होगा। पाप करना बड़ा सुगम है।

प्राचीन समय से धर्म की व्यवस्था करने वाले

नियुक्त नहीं हुये थे। अब मेरे शासनकाल के चौदहवें वर्ष में वे नियुक्त किये जाते हैं। वे सभी सम्प्रदायों के लोग धर्म को स्थिर करने और उसकी उन्नति करने में लगे हैं। वे मेरी सीमा के योन, कम्पोज, गान्धार, राष्ट्रीक, पितेनिका और दूसरे लोगों को उन्नति और कल्याण के कार्य में लगे हैं। वे मेरे सैनिकों, ब्राह्मणों, धनी, निर्धन और वृद्ध जनों का भी कल्याण करते हैं और भक्तों के मार्ग की बाधायें दूर करते हैं। वे अनुचित कारावास, दंड, और बाधाओं को भी हटाते हैं। वे उन अभियोगों पर भी विचार करते है जहां किसी बड़े परिवार वाले आपदग्रस्त और वृद्ध को दंड दिया जाता है।

वे यहां (पाटलि पुत्र) और प्रान्तीय राजधानियों में भाइयों, बहिनों और सम्बन्धियों की महिला संस्थाओं का निरीक्षण करते हैं।

मेरे राज्य में धर्म व्यवस्था करने वाले सब कहीं धर्म और दान, कार्य में लगे हुये हैं। यह आदेश इस उद्देश्य से लिखा गया है कि यह चिरकाल तक रहे और मेरी प्रजा इसके अनुसार चले।

हज़ारा-दर्शन

छठा लेख

सम्राट प्रियदर्शिन इस प्रकार आदेश देते हैं। बहुत समय से कार्य पूरा नहीं हुआ है न सब समय इसकी सूचना ही मिली है। अतः मैंने व्यवस्था की है कि सब समयों और सब स्थानों में चाहे मैं भोजन कर रहा हूँ अथवा रनिवास में हूँ अथवा शयन कर रहा हूँ, गाड़ी में सवार हूँ। अथवा महल के बगीचे में हूँ सरकारी सूचना देने वाले मुझे प्रजा के कार्य से सूचित करते रहें। मैं यह कार्य सदा करने को तैयार हूँ।

यदि मैं कभी अपने वचन से आदेश देता हूं कि कोई दान दिया जावे अथवा कोई आज्ञा पूरी की जावे अथवा कोई आवश्यक कार्य किसी कर्मचारी को सौंपा जावे और उसके सम्बन्ध में सन्देह अथवा भूल हो तो उसके सम्बन्ध में कोई समय अथवा स्थान हो मुझे तुरन्त सूचना मिले। सूचना न मिलने से सन्तोष नहीं होता है।

सर्व साधारण के हित के लिये मुझे कार्य करना ही चाहिये। इस प्रयत्न और कार्य से अधिक और कोई चीज़ अधिक आवश्यक नहीं है। मैं और किस

कार्य के लिये परिश्रम कर रहा हूँ। मैं केवल इसी उद्देश्य से कार्य कर रहा हूँ कि प्राणी मात्र के प्रति मैं अपना ऋण पूरा कर दूँ। मैं कुछ लोगों को इस लोक में सन्तुष्ट कर दूँ और परलोक में वे स्वर्ग प्राप्त करें।

मैंने इस उद्देश्य से यह लेख लिखवाया है कि यह चिरकाल तक रहे और मेरे पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र प्रजा-हित के लिये प्रयत्न करते रहें। इसकी प्राप्ति बड़ी कठिन है। अत्यन्त परिश्रम से ही इसकी पूर्ति हो सकती है।

